MS. CHAMI MURMU

Ms. Chami Murmu is an environmentalist who is popularly known as the Lady Tarzan of Jharkhand because of her determination to protect the forests and wildlife and enhance the livelihood of locals.

2. Born on 6th November, 1971 in a poor family in a small village Bhursa in Seraikela district, Ms. Murmu started her social life about 30 years ago. The condition was extremely pathetic in her surrounding areas. Some people could barely manage two meals a day. She made a team of 10 women and started working in local areas for the forests, plants and livelihood for the local poor people. She has been mobilising women from more than 500 villages to plant Eucalyptus, Sal, and Acacia trees, among others, to replenish the forests in Jharkhand that had been destroyed by the timber mafia. She and her group plants Neem, Sal, and Sheesham because they are good for making furniture and building homes.

3. Ms. Murmu is the former Secretary of Sahayogi Mahila, Bagraisai which is empowering women and making them self-dependent. To enhance the livelihood of the farmers, she and the members of Sahayogi Mahila, Bagraisai are building watersheds, not just in Seraikela Kharsawan but in the other districts, to save rainwater, which can then be used for farming purposes.The team has also started making diversion canals and water harvesting tanks. Through these initiatives, she and her team have given hope to the locals and now, farmers of Jharkhand are able to plant paddy, vegetables and arhar dal and enjoy good harvests all year around. In the last decade, more than two million trees have been planted, under her supervision and wildlife in the region has made a comeback to Jharkhand because of the revival of their habitat - the forests.

4. Ms. Murmu's network of women has become so strong that when a tree is being cut down illegally, information reaches to them and they immediately prevent any tree from being chopped off. She has connected 2800 SHG (Self Help Group) groups with her and each group have 10-15 women members. In this way she has managed to reach out to 30,000 women. All these women are able to earn by the help of SHG groups, Bank Loans are being distributed among them with the help of Sahayogi Mahila. With the help of Bank Loans, women are now capable for earning themselves by goat rearing, piggery, poultry farms. They are learning hybrid technical agriculture methods. She is also providing free education to the hundreds of poor primitive tribal girls of Jharkhand who cannot afford study. Free hostel facilities are also provided to them.

5. Ms. Murmu has been awarded with 'Indira Priyadarshini Vriksha Mitra Award' by the Ministry of Environment, Forest & Climate Change, Government of India and 'Nari Shakti Puraskar'by the Ministry of Women & Child Development, Government of India.

सुश्री चामी मुर्मू

सुश्री चामी मुर्मू एक पर्यावरणविद हैं, जिन्हें वनों और वन्यजीवों की रक्षा करने और स्थानीय लोगों की आजीविका बढ़ाने के उनके दृढ़ संकल्प के लिए झारखंड की लेडी टार्जन के नाम से जाना जाता है।

2. 6 नवंबर, 1971 को सरायकेला जिले के एक छोटे से गांव भुरसा में एक गरीब परिवार में जन्मी सुश्री मुर्मू ने अपना सामाजिक जीवन लगभग 30 वर्ष पहले शुरू किया था। उनके आसपास के इलाकों में स्थिति बेहद दयनीय थी। कुछ लोग मुश्किल से दो वक्त का भोजन जुटा पाते थे। उन्होंने 10 महिलाओं की एक टीम बनाई और स्थानीय क्षेत्रों में जंगलों, पौधों और स्थानीय गरीब लोगों की आजीविका के लिए काम करना शुरू कर दिया। वह झारखंड में लकड़ी माफिया द्वारा नष्ट किए गए जंगलों को फिर से हरा–भरा बनाने के लिए सफेदा, साल और बबूल के पेड़ लगाने के लिए 500 से अधिक गांवों की महिलाओं को एकजुट कर रही हैं। वह और उनका समूह नीम, साल और शीशम के पौधे लगाते हैं क्योंकि इन पेड़ों की लकड़ियां फर्नीचर और घर बनाने के लिए सही रहती हैं।

3. सुश्री मुर्मू सहयोगी महिला, बगरायसाई की पूर्व सचिव हैं जो महिलाओं को सशक्त बना रही है और उन्हें आत्मनिर्भर बना रही है। वह और सहयोगी महिला, बगरायसाई के सदस्य किसानों की आजीविका बढ़ाने के लिए, न केवल सरायकेला खरसावां में बल्कि अन्य जिलों में वर्षा जल को बचाने के लिए वाटरशेड का निर्माण कर रहे हैं, जिसका प्रयोग खेती के लिए किया जा सकता है। टीम ने डायवर्जन नहरें और जल संचयन टैंक बनाना भी शुरू कर दिया है। इन पहलों के माध्यम से, उन्होंने और उनकी टीम ने स्थानीय लोगों के मन में उम्मीद जगाई है और अब, झारखंड के किसान धान, सब्जियां और अरहर दाल उगा सकते हैं और पूरे वर्ष अच्छी फसल प्राप्त कर सकते हैं। पिछले दशक में, उनकी देखरेख में बीस लाख से अधिक पेड़ लगाए गए हैं और जंगलों के पुनरुद्धार के कारण क्षेत्र में वन्यजीवों ने अपने पर्यावास अर्थात झारखंड में वापसी की है।

4. सुश्री मुर्मू की महिलाओं का नेटवर्क इतना मजबूत हो गया है कि जब कोई पेड़ अवैध रूप से काटा जाता है, तो सूचना उन तक पहुंच जाती है और वे तुरंत किसी भी पेड़ को काटने से रोक देती हैं। उन्होंने 2800 स्वयं सहायता समूहों को अपने साथ जोड़ा है और प्रत्येक समूह में 10–15 महिला सदस्य हैं। इस तरह वह 30,000 महिलाओं तक पहुंचने में कामयाब रही हैं। ये सभी महिलाएं स्वयं सहायता समूहों की मदद से आय अर्जित करने में सक्षम हैं, इन्हें सहयोगी महिला की मदद से बैंक ऋण वितरित किए जा रहे हैं। बैंक ऋण की मदद से महिलाएं अब बकरी पालन, सुअर पालन, पोल्ट्री फार्म से कमाई कर सकती हैं। वे हाइब्रिड तकनीकी कृषि पद्धतियां सीख रही हैं। वह झारखंड की उन सैकड़ों गरीब आदिम जनजातीय लड़कियों को मुफ्त शिक्षा भी प्रदान कर रही हैं जो पढ़ाई का खर्च वहन नहीं कर सकतीं। उन्हें निःशुल्क छात्रावास सुविधा भी प्रदान की जाती है।

5. सुश्री मुर्मू को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार' और महिला और बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'नारी शक्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।